

जिस्म की जरूरत-9

“मैं मज़े से उनकी चूत चाट रहा था लेकिन मुझे चूत को अच्छी तरह से चाटने में परेशानी हो रही थी। उनकी चूत अब भी बहुत सिकुड़ी हुई थी, शायद...

[Continue Reading] ...”

Story By: sameer chaudhary (sameer_chaudhary)

Posted: Sunday, October 19th, 2014

Categories: [पड़ोसी](#)

Online version: [जिस्म की जरूरत-9](#)

जिस्म की जरूरत-9

मैं मज़े से उनकी चूत चाट रहा था लेकिन मुझे चूत को अच्छी तरह से चाटने में परेशानी हो रही थी।

उनकी चूत अब भी बहुत सिकुड़ी हुई थी, शायद काफी दिनों से नहीं चुदने की वजह से उनकी चूत के दरवाज़े थोड़े से सिकुड़ गए थे।

मैंने अपना मुँह हटाया और उनकी तरफ देखा।

उनकी आँखें बंद थीं लेकिन अचानक से मुँह हटाने से उन्होंने आँखें खोलीं और मेरी तरफ देख कर पूछा- क्या हुआ समीर बाबू... थक गए क्या ?

‘नहीं रेणुका मेरी जान... जरा अपनी चूत को अपने कोमल हाथों से फैलाओ तो सही ताकि मैं पूरा अन्दर घुस सकूँ।’ यह कहते हुए मैंने उन्हें आँख मारी और एक बार उनकी चूत को चूम लिया।

‘छ्त्री:... गंदे कहीं के... ऐसे भी कोई बोलता है क्या ?’ रेणुका ने मेरे मुँह से यूँ खुल्लम खुल्ला चूत सुनकर शरमाते हुए कहा।

‘अरे मेरी जान... चुदाई का मज़ा तब ही है जब हम खुलकर इन सब बातों को बोलते हुए चोदा-चोदी करें... यकीन मानिए बहुत मज़ा आएगा... एक बार कोशिश तो कीजिये।’ मैंने उनकी चूचियों को दबाते हुए उनके गालों पे चुम्बन लिया और अपने हाथों से उनका हाथ पकड़कर उनकी चूत को फैलाने के लिए इशारा किया।

रेणुका जी की चूत को मेरी जीभ का चस्का लग चुका था इसलिए अब वो भी खुलकर इस खेल का मज़ा लेना चाह रही थी।

उन्होंने शरमाते हुए अपने हाथों से अपनी चूत को थोड़ा सा फैला दिया और लज्जावश अपने शरीर को पीछे की दीवार पर टिका दिया ताकि मैं उनसे नज़रें न मिला सकूँ।

मैंने अब उनकी जांघों को थोड़ा और फैला दिया ताकि उन्हें भी अपनी चूत फाड़कर चटवाने का पूरा मज़ा मिल सके और उनकी चूचियों को थाम कर चूत के अन्दर अपनी पूरी जीभ डालकर चाटना शुरू कर दिया।

‘ओहह... समीर... उफफफफ़... मेरे प्रियतम... यह क्या कर दिया तुमने... ऐसा तो कभी सोचा भी न था कि कोई मेरी... कोई मेरी...!’ रेणुका इतना बोलकर चुप हो गई... शायद शर्म और नारी सुलभ लज्जा ने उनके होंठ बंद कर दिए थे।

‘कोई मेरी क्या भाभी... ? बोलो न... प्लीज बोलो न...!’ मैंने चूत चाटने बंद करके उनसे बोलने का आग्रह किया।

‘कोई मेरी... कोई मेरी... चू चू चूत भी चाटेगा... उफफफफ़...’ रेणुका ने काम्पते और लजाते शब्दों में आखिर चूत का नाम ले ही लिया।

उनके मुख से चूत सुनते ही मेरा जोश दोगुना हो गया और मैंने जोर जोर से उनकी चूत को चाट चाट कर चूसना चालू कर दिया।

‘हाँ... उफफफ़... बस ऐसे ही... उम्मम्म... हाय...’ रेणुका की सिसकारियाँ बढ़ गईं।

उसका बदन अकड़ने लगा और उसने मेरे सर के बालों को खींचना शुरू कर दिया।

मैं समझ गया कि अब वो झड़ने वाली है... मैंने और भी तेज़ी से चाटना शुरू किया और बस कुछ ही पल में उसकी चूत ने ढेर सारा माल मेरे मुँह में उड़ेल दिया... पता नहीं कितने सालों से जमा कर रखा था इसको।

झड़ते ही उन्होंने अपना बदन एकदम ढीला छोड़ दिया और बिल्कुल निढाल सी हो गई...
मैं उनसे थोड़ा अलग होकर उन्हें देखने लगा...

क्या मस्त नजारा था... वो दीवार पर अपना बदन टिकाये अपनी जाँघों को फैलाये अपने हाथों से अपनी चूत को मसल रही थी।

ये नजारा देखने लायक था।

अब इतनी देर से मेरे लण्ड ने जो आफत मचा रखी थी उसने भी सिग्नल दे दिया कि अब अगर चूत में नहीं गया तो बाहर ही अपना सारा लावा उगल देगा।

मुझसे रहा नहीं गया और मैंने झट से अपना तौलिया खोला और अपने लंड को अपने हाथों से सहलाते हुए हुए रेणुका जी के करीब आ गया।

उनकी बहती हुई चूत मेरे लंड को निर्विरोध आमंत्रण दे रही थी।

रेणुका जी अब भी अपनी आँखें बंद किये चूत के झड़ने का मज़ा ले रही थीं।

मैं धीरे से आगे बढ़ा और अपने लंड के सुपारे को चमड़ी से बाहर निकालकर उनकी गीली बहती चूत पर रगड़ने लगा।

जैसे ही मैंने लण्ड का सुपारा उनकी चूत के मुँह पे रखा उनकी आँखे खुल गईं और उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ा कर देखने की कोशिश की।

उनका हाथ मेरे गर्म तन्नाये लंड से टकरा गया और उन्होंने चौंक कर नीचे देखा।

एक अच्छे खासे डील डौल वाले तगड़े लंड को देख कर एक बार तो उनकी आँखें चौड़ी हो गईं... लेकिन चूत की चुसाई और इतने देर से चल रहे खेल ने अब उन्हें बेशर्म बना दिया था और उन्होंने अब आगे बढ़ कर मेरे लौड़े को अपने हाथों में थाम लिया।

‘हाय राम... कितना गर्म और कितना कड़क है तुम्हारा ये...’ रेणुका फिर कुछ बोलते बोलते रुक गई।

‘मेरा क्या रेणुका जी... ? बोल भी दीजिये ! मैंने अपने लंड को उनके हाथों में रगड़ते हुए कहा।

‘तुम्हारा... तुम्हारा लंड...’ और इतना कह कर शरमा कर आँखें तो बाद कर लीं लेकिन लौड़े को वैसे ही पकड़े रही।

फिर जब मैंने धीरे धीरे चूत के मुँह पर लंड को रगड़ना शुरू किया तो उन्होंने अपने हाथों से लण्ड को अपनी चूत पर तेज़ी से रगड़ देनी शुरू कर दी।

‘उफ़... समीर... बस ऐसे ही रगड़ दो अपने लंड को इस चूत पर... साली मुझे चैन से जीने नहीं देती... चोद डालो इस कुतिया को... टेल दो अपना मूसल ! यह क्या... रेणुका जी तो एकदम जोश में आकर गालियाँ देने लगी।

चलो उनकी यह अदा भी हमें घायल कर गई और मैं खुशी से झूम उठा... खुशी के मारे मैंने जोश में एक तगड़ा झटका मारा और मेरा आधा लंड उनकी चूत में...

‘आआआआ... हे भगवन... इतने बेरहम तो न बनो मेरे सैयाँ... तुम तो सच में फाड़ डालोगे मेरी कमसिन चूत को... उफ़फ़फ़ !’ रेणुका की चीख निकल गई।

उनकी चूत ने यह एहसास करवाया कि शायद कई दिनों से या यूँ कहें कि मुद्दतों बाद कोई लंड उस चूत में घुसा हो... शायद अरविन्द जी की बढ़ती उम्र की वजह से उनकी चूत बिना चुदे ही रह जाती है.. शायद इसीलिए उनकी चूत के दर्शन करने में मुझे ज्यादा वक़्त भी नहीं लगा था। शायद इतने दिनों की प्यास और उनकी उनके गदराये बदन की गर्मी ने उन्हें मेरे लंड की तरफ खींच लिया था।

खैर जो भी बात हो, इस वक़्त तो मुझे ऐसा महसूस हो रहा था मानो मेरी कई जन्मों की प्यास बुझ रही हो।

तीन महीनों से अपने लंड को भूखा रखा था मैंने इसलिए आज जी भरके चूत को खाना चाहता था मेरा लंड...

मैंने उसी हालत में अपने आधे लंड को उनकी चूत के अन्दर बाहर करना शुरू किया और थोड़ा इंतज़ार किया ताकि उनकी चूत मेरे मूसल के लिए जगह बन सके और मैं अपने पूरे लंड को उनकी चूत की गहराईयों में उतार सकूँ।

मैंने अपना सर झुका कर उनकी एक चूची को अपने मुँह में भरा और उसके दाने को अपने होंठों और अपनी जीभ से चुभलाते हुए अपने लंड का प्रहार जारी रखा।

चूत में लंड डालते हुए चूचियों की चुसाई औरत को बिल्कुल मस्त कर देती हैं और इस हालत में औरत गधे का लंड भी आसानी से अपनी चूत में पेलवा लेती हैं।
ऐसा मैंने पहले भी देखा और किया था।

इस बार भी वैसा ही हुआ और रेणुका जी की चूचियों को चूसते ही उनकी चूत ने एक बार और पानी छोड़ा और मेरा लंड गीला होकर थोड़ा और अन्दर सरक गया।

अब बारी थी आखिरी प्रहार की... मैंने उनकी चूचियों को मुँह से निकला और अपने होंठों को उनके होंठों पर रख कर उनकी कमर को अपने दोनों हाथों से थाम लिया फिर एक लम्बी सांस लेकर जोरदार झटका मारा।

‘गुऊंन्न... ऊउन्ह्ह्ह...’ रेणुका जी के मुँह से बस इतना ही निकल सका क्योंकि उनका मुँह मेरे मुँह से बंद पड़ा था।

उनकी इस आवाज़ ने यह इशारा किया की लंड पूरी ताक़त के साथ चूत के अंतिम छोर

तक पहुँच चुका था।

मैंने अब बिना देरी किये अपने लंड को सुपारे तक बाहर खींचा और झटके के साथ अन्दर पेल दिया।

‘उफ्फ... उम्म... हाए... समीईईर... थोड़ा धीरे... उफ्फ...!’ रेणुका ने थोड़ा दर्द सहते हुए लड़खड़ाती आवाज़ में कहा और फिर मेरे होंठों को अपने होंठों से कस लिया।

मैंने ऐसे ही कुछ लम्बे लम्बे धक्के लगाये और फिर उन्हें स्लैब से अचानक उठा कर अपनी गोद में उठा लिया।

अब वो हवा में मेरी गोद में लटकी हुई थीं और अपने पैरों को मेरी कमर से लिपट कर मेरा होंठ चूसते हुए अपनी चूत में मेरा लंड पेलवाए जा रही थीं।

बड़ा ही मनोरम दृश्य रहा होगा वो... अगर कोई हमें उस आसन में चुदाई करते देखता तो निश्चय ही अपनी चूत में उंगली या अपने लंड को हिलाए या रगड़े बिना नहीं रह पाता !!

हम दोनों पसीने से लथपथ हो चुके थे और घमासान चुदाई का आनन्द ले रहे थे।

थोड़ी देर के बाद मेरे पैर दुखने लगे तो मैंने उन्हें नीचे उतार दिया।

अचानक से लंड चूत से बाहर निकलने से वो बौखला गई और मेरी तरफ गुस्से और वासना से भरकर देखने लगी।

मैंने उन्हें कुछ भी कहने का मौका नहीं दिया और उन्हें घुमाकर उनके दोनों हाथों को रसोई के स्लैब पे टिका दिया और उनके पीछे खड़ा हो गया।

एक बार उन्होंने अपनी गर्दन घुमाकर मुझे देखा और मानो ये पूछने लगीं कि अब क्या...

शायद अरविन्द जी ने उन्हें ऐसे कभी चोदा न हो... मैंने उन्हें झुका कर बिल्कुल घोड़ी बना दिया और फिर उनकी लटकती हुई गाउन को उठा कर उनकी पीठ पर रख दिया जो अब भी उनके बदन पे पड़ा था।

हम इतने उतावले थे की गाउन उतरने में भी वक़्त बर्बाद नहीं करना चाहते थे।

उनकी गाउन उठाते ही उनकी नर्म रेशमी त्वचा वाली विशाल नितम्बों के दर्शन हुए और मुझसे रहा न गया, मैं झुक कर उनके दोनों नितम्बों पे प्यार से ढेर से चुम्बन लिए और फिर अपने लंड को पीछे से उनकी चूत पे सेट करके एक ही झटके में पूरा लंड चूत में उतार दिया।

‘आआईई... ईईईईयाह... उफ़... समीर... ऐसे लग रहा है... जरा धीरे पेलो...!’
अचानक हुए हमले से रेणुका को थोड़ा दर्द महसूस हुआ और उसने हल्के से चीखते हुए कहा।

‘घबराओ मत मेरी रेणुका रानी... बस थोड़ी ही देर में आप जन्नत में पहुँच जाओगी... बस आप आराम से अपनी चुदाई का मज़ा लो।’ मैंने उसे हिम्मत देते हुए कहा और अपने लंड को जड़ तक खींच खींच कर पेलने लगा।

आठ दस झटकों में ही रेणुका जी की चूत ने अपना मुँह खोल दिया और गपागप लंड निगलने लगी।

‘हाँ... ऐसे ही... चोदो समीर... और चोदो... और चोदो... बस चोदते ही रहो... उम्म!’
रेणुका ने अब मस्ती में आकर चुदाई की भाषा का इस्तेमाल करना शुरू किया और मस्त होकर अपनी गाण्ड पीछे ढेलते हुए लंड लेना शुरू किया।

‘लो रेणुका जी... जितनी मज़ी उतना लंड खाओ... बस अपनी चूत खोलकर रखो और लंड

लेती जाओ।' मैंने भी जोश में भरकर उन्हें उत्तेजित करके चोदना जारी रखा।

'और... और... और... जोर से मारो समीर... ठेल दो पूरा लंड को मेरी चूत में...
हाँन्न्न्... 'रेणुका अब और भी मस्ती में आ गई और पूरा हिल हिल कर मजे लेने लगी।

'यह लो... और लंड लो... चुदती जाओ... अब तो रोज़ तुम्हारी चूत में जायेगा ये लंड...
और खा लो।' मैंने भी उसकी मस्ती का जवाब उतने ही जोश में भरकर पेलते हुए दिया और
दनादन चोदने लगा।

लगभग आधे घंटे की चुदाई ने हमें पसीने से भिगो दिया था और अब हम अपनी अपनी
मंजिल के करीब पहुँच गए थे।

'हाँ समीर... और तेज़... और तेज़... और तेज़... अब मैं आ रही हूँ... आ रही हूँ मैं...
उम्मम्म... और तेज़ करो...' रेणुका अचानक से थरथराने लगी और अपने बदन को कड़ा
करने लगी।

मैं समझ गया कि अब वो अपने चरम पर है और दो तीन धक्कों में ही उसने एक जोरदार
चीख मारी।

'आआह्ह्ह्ह... उम्मम्मह... समीईईर... उम्मम्म... मैं... मैं... गईईईई...ईईई!' और
रेणुका ने अपना बदन बिल्कुल ढीला छोड़ दिया...

'उफफफ... ओह्ह्ह्ह... मैं भी आया... मैं भी आया...' और मैंने भी उसके साथ ही एक
जोरदार झटका देकर पूरे लंड को जड़ तक उसकी चूत में घोंप दिया और उसकी लटकती
चूचियों को पीछे से कस कर दबा दिया और उसकी पीठ पे निढाल हो गया।

उफफफ... ऐसा लगा मानो कई दिनों से अपने अन्दर कोई दहकता लावा जमा कर रखा था

और आज सारा लावा उड़ेल कर पूरा खाली हो गया ।

उस छोटी सी रसोई में बस हमारी तेज़ तेज़ साँसें ही सुनाई दे रही थीं ।
हम अगले कुछ मिनट तक बिना किसी से कुछ बात किए वैसे ही पड़े रहे और मैं उनकी चूचियों को सहलाता रहा ।

थोड़ी देर में मेरा लंड खुद ब खुद उनकी चूत से बाहर निकल आया और उसके बाहर निकलते ही मैंने रेणुका जी को अपनी तरफ घुमाकर अपनी बाँहों में समेट लिया ।

थोड़ी देर के बाद हम एक दूसरे के शरीर से अलग हुए और एक दूसरे की आँखों में झाँका ।

रेणुका जी मुझसे नज़रें नहीं मिला पा रही थीं और उन्होंने अपने गाउन को ठीक करना शुरू किया और अपने बदन को ढकने लगीं ।

मैंने अपना हाथ आगे बढ़ा कर उनके हाथों को रोका और उनके गाउन को दोनों तरफ से अलग कर दिया ।

‘अब क्यूँ छिपा रही हैं आप... अब तो ये मेरे हो चुके हैं... ‘ ऐसा कह कर मैंने उनकी दोनों चूचियों को झुक कर चूम लिया और थोड़ा और झुक कर उनकी चूत जो मेरे लंड और उनके खुद के रस से सराबोर हो चुकी थी उसे चूम लिया और अपनी नज़रें उठा कर उनकी आँखों में देखते हुए अपनी एक आँख मार दी ।

‘धत... बदमाश कहीं के !’ रेणुका जी ने ऐसे अंदाज़ में कहा कि मैं घायल ही हो गया ।

मैंने उन्हें फिर से गले से लगा लिया ।

थोड़ी देर वैसे रहने के बाद हम अलग हुए और मैं उसी हालत में उन्हें लेकर बाथरूम में घुस पड़ा ।

हम दोनों के चेहरे पर असीम तृप्ति झलक रही थी।

तो इस तरह मेरा तीन महीनों का उपवास टूटा और एक शुद्ध देसी औरत का स्वाद चखने का मज़ा मिला।

पिछले बीस दिनों में हम दोनों ने मौका निकल कर अब तक सात बार चुदाई का खेल खेला है। जिसमें से पांच बार मेरे घर में और दो बार उनके खुद के घर में उनकी रसोई और उनके स्टोर रूम में।

कुल मिलकर हम बड़े ही मज़े से अपनी अपनी प्यास मिटा रहे हैं और आशा करते हैं कि जब तक यहाँ रहूँगा तब तक ये सब ऐसे ही चलता रहेगा...

लेकिन शायद मेरी कहानी में एक ट्विस्ट जल्दी ही आने वाला है... मेरा इशारा किस तरफ है, यह आप समझ ही गए होंगे...

फिलहाल मैं असमंजस में हूँ कि वन्दना की तरफ अपने कदम ले जाऊँ या नहीं।

खैर आगे जैसी कामदेव की मर्जी।

समीर चौधरी

